आलू

आलू का प्रयोग घरेलू उपयोग एवं खाद्य प्रसंस्करण के द्वारा किया जाता है । भागलपुर जिले में एक प्रमुख नकदी फसल के रूप में आलू की खेती की जाती है।

मृदा का चुनाव : राज्य में आलू की खेती सभी तरह की मृदाओं में की जाती है परन्तु दोमट या बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जैविक पदार्थों की बहुलता हो , आलू की अच्छी उपज हेतु उपयुक्त है।

खेत की तैयारी : दो जुताई मिट्टी पलटने वाले हल या ट्रैक्टर से करने के बाद एक दो बार देशी हल से जोतकर मिट्टी को बारीक एवं हल्का बना लें। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाना आवश्यक है ताकि जमीन समतल एवं मिट्टी में नमी बरकरार रहे।

बीज दर : 30 क्विंटल कंद/हे. (25–30 ग्राम आकार के अंकुरित आलू कंद)। आलू को काटकर लगाने पर 3 स्वस्थ आँखों वाले टुकड़े को उपचारित कर ही लगाना चाहिए।

बीजोपचार : एगलॉल 0.5 प्रतिशत घोल या बेविस्टीन 0.01 प्रतिशत घोल मे आलू के कंदो को डुबोकर उपचारित करें। इसे छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर रोपाई कर देनी चाहिए।

मृदा उपचार : दीमक तथा कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. दवा का आवश्यतानुसार 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें ।

बुआई का समय : अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक।

बुआई की दूरी : पंक्ति से पंक्ति की दूरी 50–60 सेंमी. एवं कंद से कंद की दूरी 15–20 सें. मी.।

उर्वरक : 150 : 90 : 120 :: नत्रजन : स्फूर : पोटाश कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबन्धन : 10–15 टन कम्पोस्ट खाद को बुआई से 20–30 दिनों पूर्व खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दें। सिंचित अवस्था में नत्रजन की आधी मात्रा एवं स्फूर तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करें। नत्रजन की शेष आधी मात्रा 30–35 दिनों बाद मिटटी चढ़ाने के समय उपरिवेशन करना चाहिए।

मिट्टी चढ़ाना : आलू के कंदो को कतार में बिछाने के बाद मिट्टी चढ़ा दें ताकि कंदो को सूर्य के प्रकाश से बचाया जा सके। कंदो की अच्छी वृद्वि एवं विकास हेतु अच्छी तरह मिट्टी चढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है। अंतिम मिट्टी चढ़ाने का कार्य 30–35 दिनों के अन्दर कर लें।

सिंचाई एवं जल प्रबंधन : आलू बुआई के 4–5 दिनों बाद अंकुरण के समय पहली सिंचाई करनी चाहिए। उसके बाद 15 दिनों के अंतराल पर 3–4 हल्की सिंचाई करनी चाहिए।